अध्याय-पहला

रांगेय राघव का व्यक्तिगत परिचय।

// अ ध्या य - प ह ला //

-: रांगेय राघव का व्यक्तिगत परिचय :-

१] डॉ॰ रांगेय राघव :-

डॉ॰ रांगेय राघव हिन्दी साहित्य संसार के प्रसिध्द कथाकार है। उन्होंने कथा-साहित्य के अतिरिक्त साहित्य की अन्य विधायों पर भी लेखन किया है। इस अध्याय में डॉ॰ रांगेय राघव का व्यक्तिगत परिचय प्रामाणिक रूप से लिखने का प्रयत्न किया गया है। उनकी शिक्षा तथा उनके कार्यक्षेत्र का परिचय भी यहाँ दिया गया है।

२] वंश परम्परा और परिवार :-

डॉ॰ रांगेय राघव का परिवार कुल से दाक्षिणात्य लेकिन ढाई शतक से पूर्वज वैर [भरतपुर - राजस्थान] के निवासी [१] बने।

क] वंश परम्परा :-

यहाँ [वैर] आकर उन्होंने अपने आराध्य देवता जिन्हे वे दक्षिण भारत से आपने साथ ले आये थे, मंदिर बनाकर "सीतारामजी "की मूर्ति की प्रतिष्ठा की।[१] उस मन्दिर की देखभाल डॉ॰ रांगेय राघव के बडे भाई श्री टी॰एन॰ के॰आचार्य आज भी करते है। याने कि डॉ॰ रांगेय राघव का परिवार उस मन्दिर का मालिक है।

डॉ॰ रांगेय राघव के पूर्वजों का क्रम निम्नानुसार है -

श्री श्री निवासाचार्य

श्री वीरराघवाचार्य

श्री वरदाचार्य

श्री नारायणाचार्य

श्री विजयराघवाचार्य

श्री रंगाचार्य

१] श्री. टी.एन.एल. आचार्य २] श्री.टी.एन. के. आचार्य
३] श्री.टी.एन.व्ही.आचार्य [३]

अत: सातवीं पीढी में डॉ. रांगेय राधव हुये हैं। [४] इनके पूर्वज भी लेखन कार्य करते थे। पूर्वजों की लिखित अनेक तामिल और संस्कृत ग्रन्थों की पांडुलिपियाँ आज भी "वैर " में उनके घर में सुरक्षित हैं।

जन्मतिथि, स्थान और नाम :-

१७ जनवरी १९२३ में प्रात: ४ बजे आगरा के बाग मुजफ्फरखाँ मोहल्ले में श्री बागेश्वरनाथजी के मन्दिर से बिलकुल सटे हुए पीपलवृक्ष की छाया से आच्छादित घर में डॉ.रांगेय राधव का जन्म हुआ। [५] ठीक ही आगरा के मोहल्ला बागमुजफ्फरखाँ से गुजरनेवाले सडक के मार्ग पर श्री. बागेश्वरनाथजी के मन्दिर की बगल में आगरा नगर परिषद की ओर से एक फलक लगा हुआ है। उस पर " डॉ. रांगेय राधव मार्ग " लिखा है। इस फलक को उनका स्मृतिचिन्ह मान सकते हैं। इस समय वहाँ एक दुकान है, उसका नाम है " आसाराम बलदेवदास एण्ड सन्स "। इस संबध में रांगेय राधव के परिवार से संम्बन्धित श्यामा कहारिन ने जानकारी दी कि, इसी घर में रांगेय राधव का जन्म हुआ था। [६] बाद में उन्होंने घर बदल दिया। आज " तिलक कमर्शियल इंडस्टीट्यूट " है , वहीं पर उनका कुछ वर्षों तक कार्य क्षेत्र रहा।[७]

नाम :-

अध्ययन के अनुसार जन्म कुंडली के आधार पर रांगेय राधव के दो नाम बताये जाते हैं। १] तिरुमल निम्बाकम राममूर्ती आचार्य, २] तिरुमल निम्बाकम् वीरराघव आचार्य।[८] किन्तु रांगेय राधव की संम्पूर्ण कहानियाँ, पहला भाग : "डॉ. रांगेय राधव " इस शीर्षक में रांगेय राधव का नाम "तिरुपलै नम्बाकम वीरराघव आचार्य" है। [९] उपर्युक्त क्रमांक दो के जगह ही यही भेद दिखाई देता है। रांगेय राधव का मूलनाम, टी.एन.व्ही.आचार्य। परन्तु उनके घर और मित्रों में उनका प्यार का नाम पप्पू था। "रांगेयराघव" यह उनका साहित्यिक नाम है। उनके पिता का नाम था - रंगाचार्य, जिससे

बना " रांगेय " अर्थात रंगाचार्य का पुत्र और रांगेय राघवने अपना नाम " वीरराघव आचार्य " का संक्षेप किया - राघव। रांगेय और राघव दोनो के मिलने से बना हुआ नाम हैं - " रांगेय राघव "। कुछ लोग उन्हे आचार्य एवं स्वामी भी कहते थे। लेकिन इन नामों का अधिक प्रचलन न रहा। वैर के लोग उन्हें स्वामीजी, छोटे महाराज या भैयाजी आदि आदरवाचक संबोधन से संबोधित करते थे। साहित्यिक जीवन में पदार्पन करने के बाद उन्होंने कवि मित्र भारतभूषण अग्रवाल के सुझाव पर ध्यान देकर अपना संक्षेप नाम रांगेय राघव रखा। [१०]

३] पारिवारिक संस्कार :-

डॉ. रांगेय राघव का परिवार सुसम्पन्न तथा सुसंस्कृत था। रांगेय राघव के पिता श्री रंगाचार्य " वैर " के **जागीरदार** और सीतारामजी के मन्दिर के मालिक थे। रांगेय राघव पर इन संस्कारों का प्रभाव पडा है। परिवार के महत्त्वपूर्ण सदस्यों के क्रम से इन संस्कारों का शब्दलेखन यहाँ किया जा रहा है।

पिता :-

श्री रंगाचार्य संस्कृत के विद्वान थे। वे एक श्लोक का अर्थ तीन दिन तक भिन्न भिन्न रूपों में समझाते थे। वे फ़ारसी के ज्ञाता थे। और फारसी में शायरी भी करते थे। संस्कृत के विद्वान होने के कारण वे काव्यशास्त्र का खास ज्ञान रखते थे। वे रांगेय राघव को पिंगल शास्त्र पढने का आग्रह करते थे। [११] यहाँ रांगेय राघव के व्यक्तित्व के निर्माण में उनके पिता के संस्कार दिखाई देत हैं।

माता :-

डॉ. रांगेय राघवजी की माताजी का नाम कनकवल्ली था। वह सीधी, सरल और सुसंस्कृत महिला थी। वह साहित्य और ब्रजभाषा में विशेष रुचि रखती थी। वह तमिल -कन्नड की भी ज्ञात्री थी। [१२] रांगेय राघव के व्यक्तित्व के निर्माण में उनकी माता के संस्कार पाये जाते हैं।

रांगेय राघवने परम्परा नुसार माता से वे संस्कार प्राप्त किये।

भाई :-

डॉ. रांगेय राघव सबसे छोटे थे। डॉ. रांगेय राघव के दो बडे भाई थे। पहला श्री टी.एन. एल. आचार्य और दूसरा श्री टी.एन.के. आचार्य। उन्हें एक छोटी बहन " इंदिरा " भी थी। परन्तू वह डेढ वर्ष के शैशवकाल में ही चल बसी। तत्पश्चात् परिवार में कन्या का जन्म नही हुआ। अत : उनकी कोई बहन नहीं थी। सबसे छोटे होने के कारण परिवार के सभी सदस्यों का स्नेह उन्हें प्राप्त हुआ। [१३]

भाईयोंने परिवार का भार संभाल लिया, अत: रांगेय राघव अपने लेखन कार्य में वक्त दे सके।

श्रवणकुमार :-

श्रवणकुमार डॉ. रांगेय राघव के परिवार में सेवक था। श्रवणकुमार ने १३ वर्ष तक उनके परिवार की सेवा की।

डॉ. रांगेय राघव श्रवणकुमार के साथ सेवक की अपेक्षा भाई-सा व्यवहार करते थे। वे श्रवणकुमार को " सरमन " नाम से संबोधित करते थे। सरमन उनकी शारीरीक और साहित्यिक सेवा करताथा। विश्राम के समय वे सरमन से ग्रामीण कहानियाँ सुनते थे। वे इन कहानियों को मनोविनोद के रूप में नही सुनते थे, अपि तु उन्हें कभी-कभी साहित्यिक रूप भी प्रदान करते थे। " गदल " , नई जिंदगी के लिए, आदि कहानियाँ उसी का फल है। सरमन रांगेय राघव की मृत्यू के समय भी बम्बई में उनके पास था।

श्रवणकुमार के रांगेय राघव के साहचर्य में रहकर दो- तीन काव्य संग्रह बाद में प्रकाशित हुए।

श्रवणकुमार की रांगेय राघव के प्रति अन्तिम श्रध्दा रही है। इसलिए उसने " वैर " में सन १९७४ में " डॉ. रांगेय राघव अध्ययन केंद्र " की स्थापना की और आज भी वह केन्द्र कार्य कर रहा है। [१४]

आयंगार परिवार से रिस्ता :-

डॉ. रांगेय राधव हिन्दी भाषा एवं साहित्य की सेवा करने हेतू वे विवाह के इच्छुक नही थे। फिर भी सामाजिक एवं पारिवारिक दबाव उन पर पड रहा था। वे ३३ वर्ष तक अविवाहित रहें।

एक बार रांगेय राधव बम्बई में श्रीकृष्ण स्वामी आयंगार के परिवार में लडकी देखने के हेतू गये थ। वहाँ इन्होने श्रीमती सुलोचनाजी की बडी बहन श्रीमती शकुन्तलाजी को देखा। किन्तु स्वंय को अयोग्य समझकर उन्होने अपेने बडे भाई श्री टी.एन.एल. आचार्य का प्रस्ताव रखां। श्री टी.एन.एल.आचार्य और श्रीमती शकुन्तलाजी आयंगार का सन १९५४ में विवाह सम्पन्न हुआ।

सन १९५५ के दिसम्बर महीनें में प्रथम बार श्रीमती सुलोचनाजी अपनी माँ के साथ, बडी बहन श्रीमती शकुन्तलाजी से मिलने हेतू " वैर " आयी थी। वहीं रांगेय राधवजीने श्रीमती सुलोचना को समीप से देखा - परखा और समझा। वहाँ परस्पर वार्तालाप के भी कई प्रसंग आये। जब उन्होंने श्रीमती सुलोचना के सम्मुख विवाह प्रस्ताव रखा तब श्रीमती सुलोचनाजीने मौन स्वीकृति दी। अन्तत: दोनों की पारस्परिक निष्ठा सफल हुई और ७ मई १९५६ को माटुंगा, बम्बई में विवाह सम्पन्न हुआ। [१५]

श्रीमती सुलोचनाजी के पिता का परिवार भी सम्पन्न तथा सुसंस्कृत था। श्रीमती सुलोचनाजी का जन्म ३१ जूलाई १९३६ को जुनागढ [गुजरात राज्य] में हुआ। बाद में आयंगार परिवार जुनागढ छोडकर बोर्डी [महाराष्ट्र राज्य] में आकर बस गया। सन १९५० में आपने बडे भाई श्री ए.के.एस्.आयंगार [१६] के साथ श्रीमती सुलोचना बम्बई आयी। उनकी हाईस्कूल की शिक्षा कुर्ला के होली क्रांस स्कूल में हुयी।

उन्होंने सन १९५६ में हाईस्कूल की परीक्षा पास की और इसी वर्ष उनका विवाह भी हुआ। मराठी के मानवतावादी लेखक श्री सानेगुरूजी से शिक्षित होने का उन्हें सुयोग मिला है। साहित्य तथा कला की उन्हें अच्छी परख है। उनकी इच्छा थी कि, ऐसे व्यक्ति से विवाह हो जो वास्तव में महान कलाकार हो। उनका सपना साकार हुआ। [१७]

श्रीमती सुलोचनाजी की शिक्षा विवाहपूर्व हाईस्कूल तक हुयी थी। विवाह के बाद रांगेय राघव की प्रेरणा से श्रीमती सुलोचनाने " रामनारायण रूईया कॉलेज माटुंगा, बम्बई में बी.ए.तक की शिक्षा पाई। रांगेय राघव की मृत्यु के पश्चात उन्होंने राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर में समाजशास्त्र में एम.ए. किया। वह इन दिनों में राजस्थान में विश्वविद्यालय समाजशास्त्र विभाग में प्राध्यापिका है। [१८] आज जो पद और प्रतिष्ठा श्रीमती सुलोचना ने पाई है, उसका वास्तविक प्रेरणा- स्त्रोत डॉ. रांगेय राघव ही थे। [१९]

विवाह के बाद चार वर्ष के बाद इनके परिवार में ८ फरवरी १९६० में कन्या का जन्म हुआ। श्रीमती सुलोचनाजीने कन्या का नाम " कल्पना " रखा, किन्तु रांगेय राघव इस नाम से संतुष्ट नहीं थे। संतान प्राप्ति के एक वर्ष पूर्व ही उन्हें किसी ने बताया था कि, घर में लडकी पैदा होगी और उनका नाम - " सीमा " - सीमान्तिनी - रखा जाये। एक वर्ष बाद वैसा ही हुआ। इसलिए कन्या का नाम " सीमा--न्तिनी " रखा गया। [२०] " सीमान्तिनी " राघव को पैतृक गुण प्राप्त हुए हैं। वह, बाल्यावस्था से ही साहित्य में रूची रखती है। उसकी कई रचनाएँ विविध पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं। [२१]

सन १९४९ में श्री रंगाचार्य की मृत्यु हुयी। पिता की मृत्यु के ठीक दसवर्ष बाद २७ जनवरी १९५९ को उनकी माता की मृत्यु कैन्सर के कारण हुई। इसी बीमारी से ही बाद में रांगेय राघव की मृत्यु १२ सितम्बर १९६२ में हुई।

४] शिक्षा और कार्य :-

डॉ. रांगेय राघव का प्रधान कार्यक्षेत्र तथा अध्ययन है। रांगेय राघव ने एक सच्चे ज्ञान साधक के रूप में शिक्षा प्राप्त की है। उन्होंने विश्व विद्यालय की उच्चतम उपाधि पी.एच.डी. भी प्राप्त की। उनकी शिक्षा तथा कार्य का सामान्य परिचय नीचे दिया जा रहा है।

१] शिक्षा :-

डॉ. रांगेय राघव की शिक्षा आगरा में हुयी।[२२] प्रारंभ में हाईस्कूल तक की शिक्षा सेन्टजान्स स्कूल और विक्टोरिया स्कूल में हुई। हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण होने के बाद उन्होने सेंटजान्स कॉलेज में एम्.ए.तक का अध्ययन किया।[२३] वे [हिन्दी] १९४४ में स्नातकोत्तर हुये।[२४] रांगेय राघवने पी-एच.डी. उपाधि आगरा विश्वविद्यालय में प्राप्त की। इनके शोध प्रंबध का विषय " भारतीय मध्ययुग के सन्धिकाल का अध्ययन [श्री गुरु गोरखनाथ एण्ड हिज टाईम] है। यह कार्य उन्होंने श्री डॉ. हरिहरनाथ टण्डन के निर्देशन में सन १९४८ में पूर्ण किया। सन १९४८ में अन्हे उपाधि भी प्राप्त हुई। रांगेय राघव ने वाराणसी मणिनाथ के मठ में जाकर वहाँ से नाथ साहित्य की सामग्री एकत्रित की। इसी तरह शान्तिनिकेतन में उनकी आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदीजी से भेट हुई। उनके द्वारा उन्हे मार्गदर्शन भी मिला। व्यक्तिगत रूप से उन्हें शोधकार्य करने के लिए उपर्युक्त वातावरण शान्तिनिकेतन में प्राप्त हुआ। इसप्रकार उन्होंने अपना प्रबन्ध पूर्ण किया और उपाधि प्राप्त की। इस समय उनकी अवस्था २५ वर्ष की थी।[२५]

२] अन्य विषयों का अध्ययन :-

डॉ. रांगेय राघवजीने नियमित पाठ्यपुस्तकों के साथ - साथ अन्य अनेक विषयों का परिश्रम से अध्ययन किया है। विशेष जानकारी के लि लिए कुछ विषयों का परिचय नीचे दिया जा रहा है।

रांगेय राधव को साहित्य के अतिरिक्त संस्कृत, चित्रकला संगीत, और इतिहास - पुरातत्व में विशेष रुचि है। साहित्य की प्राय : सभी विधाओं में वे सिध्दहस्त है। [२६]

३] कार्य :-

डॉ. रांगेय राधवजीने " किशोरावस्था से लेखनारंभ " किया था। १९-२० वर्ष की अवस्था में अकालग्रस्त बंगाल की यात्रा की। लौटकर हिन्दी के प्रारंभिक पर अविस्मरणीय रिपोर्ताजो - " तूफानों के बीच " का सृजन। २३ - २४ वर्ष की आयु से ही वे हिन्दी जगत में अभूतपूर्व चर्चा के विषय बने। मई, १९४७ में प्रथम कहानी - संग्रह " साम्राज्य का वैभव " का प्रकाशन किया। " मेरी प्रिय कहानियाँ " चमन " सहित कुल ग्यारह कहानीयाँ " चमन " सहित कुल ग्यारह कहानी संग्रह प्रकाशित हुए। अनेक कहानियाँ भारतीय तथा विदेशी भाषायों में अनुदित हो गयी। [२७]

डॉ. रांगेय राधवजी का सम्बध आगरा से घनिष्ट रहने के कारण यहीं से अपनी रचनाओं के लिए सामग्री का संकलन किया था। आपने शोध- प्रबन्ध पूर्ण करने के हेतू सामग्री करने के लिए वाराणसी गये और शांन्ति निकेतन के स्वस्थ वातावरण में उन्होंने शोधकार्य पुरा किया।

सन १९४२ में उन्होंने आगरा के स्थानिय हिन्दी दैनिक " सन्देश " में सम्पादन कार्य किया। [२८] सन १९४६ में उन्होंने द्वैमासिक निर्माण का सम्पादन कार्य संभाला। सन १९४८ में आगरा विश्वविद्यालय से उन्हें पी-एच.डी. की उपाधि मिली। [२९]

सन १९५२ में डॉ. रांगेय राधव अपने मित्र प्रोडयूसर श्री सत्यपाल शर्मा के साथ सिने जगत में कार्य करने हेतू बम्बई गए। वहाँ उन्होंने कुछ फिल्मों की कथाएँ लिखीं। [३०] जिनमें से एक " लंका दहन " पर फिल्म भी बन गयी। [३१]

डॉ. रांगेय राघव लम्बे समय तक अविवाहित रहने के बाद ७ मई, १९५६ को सुलोचना आयंगार से विवाह किया। ८ फरबवरी, १९६० को पूत्री सीमान्तिनी का जन्म।[३२] सन १९६१ में रांगेय राघव पर कैन्सर का भीषण आक्रमण हुआ।[३३] कोई निदान नहीं हुआ। आखिर १२ सितम्बर १९६२ को उनकी मृत्यु हो गयी। इसप्रकार रांगेय राघव ने लेखनकार्य में अधिकांश जीवन आगरा, वैर और जयपुर में व्यतीत किया। आजीवन स्वंत्रत्र लेखन और कठिण संघर्ष को झेला।[३४]

५] व्यक्तित्व के पहलू :-

डॉ. रांगेय राघव अद्भूत प्रतिभावन सर्वमान्य लेखक थे। उनका व्यक्तित्व विविध पहलूओं से आकर्षक बन गया था।

१] शरीर सौष्ठव :-

डॉ. रांगेय राघव का व्यक्तित्व मनमोहक एवं आकर्षक था। गौरवर्ण, उन्नत ललाट और सुगठित - सुकुमार शरीर। उनकी आँखे और अंगुलियाँ अद्भुत थीं। आँखे विशाल और आभा से दीप्त थीं। आँखे विशाल और आभा से दीप्त थी। उनमें मोहनी शक्ति बसी हुयी थी। जो देखनेवाले को मंत्रमुग्ध कर देती थी। उनके हाथ की अंगुलियाँ लम्बी तथा कोमल थीं। डॉ. रांगेय राघव के व्यक्तित्व को उनके मित्र डॉ. कुन्दलाल उप्रेतिने इस प्रकार शब्दबध्द किया है - " लम्बा शरीर, साफ चेहरा, उन्नत और स्निगध ललाट, लंबी एवं नुकीली नाक, नक्काशी की हुयी मुस्क्याती भवें, सतेज विशाल नेत्र [जिनमें कभी - कभी शरारत भी बहक जाती थी। लम्बे पतले पतले गुलाबी नाजुक ओठ और ठोढी। सरिता की गम्बीर भँवरों को समेटती हुई। यह सब कुछ मिलकर ही तो इंन्द्रधनुष्य बनता है और वह इन्द्रधनुष्य ही था। ऐसी सौम्य, शालीन मुखाकृति एक नवीन सृष्टि रही थी। मानों तमिलनाडू और ब्रजभूमि की

छविने एकाएकार होकर एक नवीन व्यक्तित्व की सृष्टि की हो। [३५] उनका यह शरीर सौष्ठव मृत्यु तक जैसे के तैसे ही रहा। बाद में सिर के बाल झड गये थे। इसके लिए वे सचेत रहते थे। प्राय : उन्होंने कई दवाईयाँ की थी, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। वे अपना गंजापन छुपाने के लिए बाद में टोपी पहनेने लगे थे। सन १९५७ के बाद जैसे जैसे बीमारी का असर बढता गया वैसे - वैसे उनका स्वास्थ गिरता गया।

२] वेश - भूषा :-

डॉ. रांगेय राधव की वेश भूषा सामान्य थी। विद्यार्थी दशा में वे शर्ट और पतलुन पहनते थे। बाद में वे कुरता और पाजामा या धोती पहनने लगे, पैरो में चप्पल रहती थी, जाडे के दिनो में वे शालू का उपयोग करते थे, कभी - कभी शेरवानी और अचकन पहनते थे, सिर पर टोपी और अधिक ठण्ड पडने पर गले में मफलर लिया करते थे, धोती के पटल का एक सिरा हाथ में थामें मन्द मन्द एक-सी-चाल चलना उनको भाता था। उनकी इस चाल को और लोग ध्यान से देखते थे। पडोसी तक इसमें रुचि लेते थे। [३६] प्राय : वे दाढी मूँछ साफ रखते थे। यदि कोई सनक सवार हुई तो दाढी - मूँछ बढा लेते थे। इससे उनका व्यक्तित्व और अनोखा हो जाता था। वे चाहते कि, उनका व्यक्तित्व विवेकानन्द सदृश्य हो। तदर्थ वे उनके चित्र के सामने घण्टो खडे रहते और अपने आपको उसी तरह से संवारने का प्रयत्न करते।

३] अभिरुची :-

डॉ. रांगेय राधव प्रकृति का सौंदर्य लेखन करने में बडे कुशल थे। वे हमेशा प्रकृति में रुचि लेते और घुमते वक्त मित्रों को अपनी ओर आकृष्ट करते रहते। समाज में उन्हें मौलिक स्थान था। वे मित्रों के यहाँ अपना समय गवाँते थे। आगरा में तीन रेस्तराँ ऐसे हैं जहाँ वे प्राय :

जाया करते थे। उनके नाम है दरोगा, नापा, गोवर्धन। इनके अतिरिक्त उनका प्रिय रेस्तराँ बागमुजफ्फरखाँ मोहल्ले के बाबू नत्थीलाल का था। वह एकदम सामान्य रेस्तराँ था। उनका यह प्रिय रेस्तराँ सन १९४९ के आस पास बंद हो गया है। रांगेय राघवने अपने लेखन के लिए रेस्तराँओ से सामग्री प्राप्त की है। वे जहाँ भी जाते थे, वही उनका किसी एक सामान्य रेस्तराँ से लगाव हो जाता था। [३७]

डॉ रांगेय राघव धूम्रपान के आदी थे। उनका एक मात्र व्यसन था - सिगरेट पीना। वे लगातार सिगरेट पी लेते थे। कई बार वे एक साथ दो-दो सिगरेट जलाकार पी लेते थे। परिवार के सदस्यों की उपस्थिती में वे सिगरेट पी लेते थे। इसमें उनके मित्र भी सम्मिलित होत थे। बाद में मात्र कैन्सर से पीडित होने पर भी उनकी सिगरेट नही छुटी। डॉक्टर के मना करने पर भी उनकी वे चोरी - चोरी सिगरेट पी लेते थे। पत्नी तथा स्नेहियों के अनुरोध और आग्रह को उन्होंने सदैव टाला। [३८]

डॉ. रांगेय राघव अपने साहित्य सेवी मित्र मण्डली के साथ प्रसंगोचित बौध्दिक व्यंग्य विनोद करते थे। उनमें श्री राजनाथ शर्मा, डॉ. कुन्दलाल उप्रेति, डॉ. विश्वम्भरनाथ उपाध्याय, डॉ. धनश्याम अस्थाना डॉ. रामविलास शर्मा, इनके व्यंग्य -विनोद के विशेष लक्ष्य बनते थे। [३९]

साहित्य लेखन करने के कारण सत्य का उद्‌घाटन करने की रांगेय राघव की वृत्तिती आकर्षक थी।

६] साहित्य लेखन - योजना :-

डॉ. रांगेय राघवने प्रचुर मात्रा में साहित्य लेखन किया है। वे हमेशा अध्ययन करके उस आधारपर पहले योजना बनाते थे। बाद में वे साहित्य लिखते थे। मानसिक थकान की स्थिति में वे मनोरंजनात्मक साहित्य का अध्ययन करते थे। मनोरंजनात्मक साहित्य में बाबू देवकीनंदन खत्री की

" चंद्रकान्ता संतति " विशेष रूप से पढते। वह उनका प्रिय ग्रंथ था। वे शौच के समय भी शौचालय में पत्र- पत्रिकाएँ पढ लेते थे। उन्होंने शौचालय को दैनिक वाचनालय का रूप दिया था। बिना पुस्तक के उनका कोई नित्यकर्म पूर्ण नही होता था। [४०]

उनके व्यक्तित्व की विशेषता में यह दिखाई देता है कि, प्रारंभ में वे अपनी कृति की योजना बनाते - उसे मुख्य शिर्षक - उपशीर्षक में विभाजित करते, उसके अन्तर्गत दो बार परिच्छेद लिख देते - या दो - चार कोर पन्ने छोड देते - पुन : एक आध परिच्छेद लिख देते - इस तरह से अपनी कृति की रूप रेखा बना लेते ।

डॉ. रांगेय राघवने " संस्कृत रचनाओं का हिन्दी और अंग्रेजी में अनुवाद किया है। विदेशी साहित्य का अंग्रेजी के माध्यम से हिन्दी में अनुवाद किया है। [४१]

अनेक साहित्यकारों में योजना बनाकार साहित्य लिखनेवालों में डॉ. रांगेय राघवजी को गिन सकते हैं। रांगेय राघव एक अपवाद ठहर सकते है। यह उनके व्यक्तिगत परिचय की विशेषता है।

इसप्रकार मृत्यु के साथ संघर्ष करते करते एक दिन " अन्त मे ११ सितम्बर की सुबह उनकी हालत अंत्यत गंभीर हुई और सारे प्रयत्न के बावजुद बुधवार १२ सितम्बर १९६२ को सांय ४ बजे उनका देहावसान हो गया। [४२] मृत्यु के समय इनकी आयु केवल ३९ वर्ष की थी। मृत्यु के बाद बम्बई में ही क्वीन्स रोड स्थित चन्दनवाडी सोनापूर के स्मशान में उनका दाहसंस्कार किया गया। [४३] इस प्रकार रांगेय राघव का पूर्ण रूप से सुन्दर व्यक्तिगत परिचय कराने की कोशिश की है।

**********-

// अ ध्या य - प ह ला //

-: सन्दर्भ - सूची :-

क्रम — ग्रन्थ का नाम और पृष्ठ क्रमांक :-

१] डॉ॰ रांगेय राधव की सम्पूर्ण कहानियाँ, पहला भाग : " डॉ॰ रांगेय राधव " इस शीर्षक से प्राप्त।

२] कथाकार रांगेय राधव : जीवनी एवं व्यक्तित्व : डॉ॰ कमलाकर गंगावणे, पृ॰१८॰

३] वही, पृ १८॰

४] वही, पृ॰ १८

५] वही, पृ॰ १८

६] वही, पृ॰ १८-१९ डॉ॰ कमलाकर गंगावणे जी को रांगेय राधव के परिवार से सम्बन्धित श्यामा कहानि से प्राप्त।

७] वही, पृ॰ १९ अ, कमलाकर गंगावणे को डॉ॰ धनश्याम अस्थाना से प्राप्त।

८] ही, पृ॰ १९

९] रांगेय राधव की सम्पूर्ण कहानियाँ, पहला भाग : " डॉ रांगेय राधव " इस शीर्षक से प्राप्त।

१०] कथाकार रांगेय राधव : जीवनी एवं व्यक्तित्व : डॉ॰ कमलाकर गंगावणे , पृ॰ १९

११] वही, पृ २०

१२] वही, २०

१३] वही, २०

१४] वही, २१

१५] वही, २१

१६] वही, २२

१७] वही, २२

१८] वही, २२

१९] वही, २२

२०] वही, २२

२१] वही, पृ. २३

२२] रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ, पहला भाग : " डॉ. रांगेय राघव " शीर्षक से प्राप्त।

२३] कथाकार रांगेय राघव : जीवनी एवं व्यक्तित्व : डॉ. कमलाकर गंगावणे, पृ २४

२४] रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ, पहला भाग : " डॉ. रांगेय राघव " शीर्षक से प्राप्त।

२५] कथाकार रांगेय राघव : जीवनी एवं व्यक्तित्व : डॉ. कमलाकर गंगावणे पृ. २४

२६] रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ, पहला भाग : " डॉ. रांगेय राघव " शीर्षक से प्राप्त।

२७] वही।

२८] कथाकार रांगेय राघव : जीवनी एवं व्यक्तित्व : डॉ. कमलाकर गंगावणे पृ. २६

२९] वही, पृ. २६

३०] वही, पृ. २६

३१] रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ, पहला भाग : " डॉ. रांगेय राघव " शीर्षक से प्राप्त।

३२] वही।

३३] कथाकार रांगेय राघव : जीवनी एवं व्यक्तित्व : डॉ. कमलाकार गंगावणे पृ. २६

३४] रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ, पहला भाग : " डॉ. रांगेय राघव " शीर्षक से प्राप्त।

३५] कथाकार रांगेय राघव : जीवनी एवं व्यक्तित्व : डॉ. कमलाकर गंगावणे पृ. २७

३६] वही, पृ २७ - २८

३७] वही, पृ. २८

३८] वही, पृ २८

३९] वही, पृ २९

४०] वही, पृ २९

४१] रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ, पहला भाग : " डॉ. रांगेय राघव " शीर्षक से प्राप्त।

४२] कथाकार रांगेय राघव : जीवनी एवं व्यक्तित्व : डॉ. कमलाकर गंगावणे पृ. ३२

४३] वही, पृ ३२

=**********=